आर्थिक दशा :-

सभी स्रोतों से स्पष्ट होता है कि उस समय देश की आर्थिक दशा उन्नत थी। कृषि जनता की जीविका का मुख्य आधार थी। ह्वेनसांग लिखता है कि अन्न तथा फलों का उत्पादन प्रभूत मात्रा में होता था। भूमि का अधिकांश भाग सामन्तों के हाथ में था। कुछ भूमि ब्राह्मणों को दान के रूप में दी जाती थी। इसे 'ब्रह्मदेय' कहा जाता था। कृषि के लिए सिंचाई की उत्तम व्यवस्था थी। हर्षचरित में सिंचाई के साधन के रूप में 'तुला यन्त्र' (जल पम्प) का उल्लेख मिलता है।

कृषि के अतिरिक्त वाणिज्य, व्यवसाय, उद्योग-धन्धे तथा व्यापार भी उन्नति पर थे। देश में कई प्रमुख व्यापारियों का व्यापारिक नगर थे। व्यापार-व्यवसाय का कार्य श्रेणियों द्वारा होता था। विभिन्न व्यवसायियों की अलग-अलग श्रेणियाँ होती थीं। वे अपने सदस्यों को व्यवसाय की भी शिक्षा देते थे ताकि वे उनमें निपुणता प्राप्त कर सकें। मथुरा सूती वस्त्रों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध था। सिक्के विनिमय के माध्यम थे, किन्तु इस काल के बहुत कम सिक्के मिलते हैं, जो व्यापार-वाणिज्य की पतनोन्मुख दशा का सूचक है।

देश में आंतरिक तथा बाह्य दोनों ही प्रकार का व्यापार होता था। इसके लिए थल के अलावा थल तथा जल मार्गों का उपयोग किया जाता था। 'कपिशा' का वर्णन करते हुए ह्वेनसांग लिखता है कि वहाँ भारत के प्रत्येक कोने से व्यापारियों के व्यापारिक सामग्रियाँ पहुँचायी जाती थीं। यहाँ से भारतीय व्यापारी पाश्चिमी देशों को जाते थे। पूर्वी भारत में 'ताम्रलिप्ति' तथा पश्चिमी भारत में 'भड़ौंच' सुप्रसिद्ध व्यापारिक बन्दरगाह थे। चीन तथा पूर्वी द्वीप समूहों के साथ भारत का घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध था। ताम्रलिप्ति से जहाज मलय प्रायद्वीप तक जाते थे।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि यह काल व्यापार-वाणिज्य के पतन का काल था और समाज उत्तरोत्तर कृषिमूलक होता जा रहा था।

शिक्षा और साहित्य :-

हर्षवर्द्धन स्वयं एक उच्च कोटि का विद्वान था, अतः अपने शासन काल में उसने शिक्षा एवं साहित्य की उन्नति को पर्याप्त प्रोत्साहन प्रदान किया। पूरे देश में अनेक गुरुकुल, आश्रम एवं विहार थे जहाँ विद्यार्थियों को विविध विधाओं की शिक्षा दी जाती थी। हर्ष को संस्कृत के तीन नाटक ग्रन्थों का रचयिता माना जाता है — (क) प्रियदर्शिका (ख) रत्नावली (ग) नागानन्द।

11वीं शती के कवि सोड्ढल ने उसे 'वाणी (काव्य) का हर्ष' कहा है। जयदेव ने हर्ष को 'कविता-कामिनी का साक्षात हर्ष' निरूपित किया है। हर्ष के दरबार में अनेक विद्वान, कवि एवं लेखक निवास करते थे। इसमें बाणभट्ट, मयूर एवं मातंग दिवाकर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बाणभट्ट उसके दरबारी कवि थे। उन्होंने 'हर्षचरित' तथा 'कादम्बरी' की रचना की। मयूर ने

[Conti...]

'सूर्यशतक' नामक 100 श्लोकों का संग्रह लिखा। मातंग दिवाकर की किसी भी रचना के विषय में हमें ज्ञात नहीं है। कुछ विद्वान पूर्वमीमांसा के प्रकाण्ड विद्वान 'कुमारिलभट्ट' को भी हर्षकालीन मानते हैं। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध गणितज्ञ 'ब्रह्मगुप्त' का जन्म भी हर्ष के समय में ही हुआ था। उसका ग्रन्थ — 'ब्रह्मसिद्धान्त' नाम से प्रसिद्ध है। 'हरिदत्त' को भी हर्ष ने संरक्षण प्रदान किया। 'जयसेन' शब्द विद्या, भूगोल, चिकित्सा तथा गणित का पंडित था। हर्ष ने उसे उड़ीसा के 80 ग्रामों के राजस्व की भेंट दी थी, किन्तु जयसेन ने वह भेंट अस्वीकार कर दी।

नालन्दा विश्वविद्यालय :- हर्ष के समय में नालन्दा महाविहार महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रधान केन्द्र था। नालन्द बिहार के पटना जिले के राजगृह से 8 मील की दूरी पर आधुनिक बड़गाँव नामक ग्राम के पास स्थित था। मूलतः इस महाविहार की स्थापना गुप्तशासक कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई०) के समय हुई थी। यह लगभग एक मील लम्बा तथा आध मील चौड़ा था। इसके बीच में 8 बड़े कमरे तथा व्याख्यान के लिए 300 छोटे कमरे बने थे। यहाँ तीन भवनों में स्थित 'धर्मगंज' नामक विशाल पुस्तकालय था। हर्ष के समय नालन्दा विश्वविद्यालय अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर था। आचार्य शीलभद्र हर्ष के समय यहाँ के कुलपति थे। हर्ष ने 100 ग्रामों की आय इसका खर्च चलाने के लिए प्रदान किया तथा यहाँ लगभग 100 फीट ऊँचा पीतल का एक बनवाया था।

नालन्दा विश्वविद्यालय मुख्यतः बौद्ध विहार था। इसकी स्थापना बुद्ध की शिक्षा को फैलाने के लिए की गयी थी। किन्तु नालन्दा वि० वि० बौद्ध ज्ञान के विहार से भी बढ़ गया। समय के साथ-साथ यहाँ बौद्ध धर्म के अतिरिक्त अन्य विषय भी पढ़ाये जाने लगे। बताया गया है कि नालन्दा वि० वि० में अध्ययन के विषय — वेद, तर्क, विद्या, व्याकरण, चिकित्सा विज्ञान, सांख्य, योग, न्याय और बौद्ध धर्म की विभिन्न शाखाओं की पुस्तकें थीं।

नालन्दा विश्वविद्यालय इत्सिंग की यात्रा के पश्चात् भी पाँच सदियों तक उन्नति करता रहा। नालन्दा विश्वविद्यालय के पतन का इतिहास एक प्रकार से भारत में बौद्ध धर्म के ह्रास का इतिहास है।

— Dr. Madan Paswan, Lecture no. 17.,
History, Date: 14.8.2020

Ajanta Officer